B-2

L-1

दिनांक
23-11-23

Introduction

सर द्वारा बताया गया पढ़ने का तरीका एवं स्रोत।

UPSC

[1] Syllabus — Prelims + Mains

[2] Previous year question paper < Pre. / Mains

[3] Focus on Conceptual and Factual clarity.
⇓
(NCERT)

[4] Reading 1 book 4 Time - (1×4)

[5] Reading, Writing and Thinking ⇒ सभी साथ में लेकर चलें -

[6] SWOT Analysis पर काम करें -
S - Strengths
W - Weaknesses
O - Opportunities
T - Threats

[7] Extended and Interdisciplinary Approach.

[8] - Smart Studies ⇒ Make Synopsis + Answer writing.

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

इतिहास क्या है? ⇒ (इति + ह + आस)

⇒ "ऐसा निश्चित ही हुआ" का विषय इतिहास है

→ ई. एच. कार के अनुसार अतीत और वर्तमान के मध्य निरंतर होने वाला संवाद जिससे हमारा भविष्य प्रकाशित होता है, इतिहास कहलाता है।

→ कार्ल मार्क्स के अनुसार निरंतरता एवं परिवर्तनीयता का सम्यक अध्ययन ही इतिहास है।

इतिहास का पुनर्लेखन :-

- इतिहास का यही आकर्षक पहलू है कि अतीत का विषय होते हुए भी इसमें नवीनता शामिल होती है यदि तथ्य, साक्ष्य व अनुसंधान पुरानी मान्य बातों को नकार कर नयी सूचना देता है तो इतिहास का पुनर्लेखन आवश्यक हो जाता है क्योंकि इतिहास का अर्थ ही है "ऐसा निश्चित ही हुआ" को समझाना।

आधुनिक युग में जब विज्ञान व तकनीक नये उपागमों जैसे कृत्रिम बुद्धिमता, रोबोटिक्स, ब्लॉक चैन तकनीक, उपग्रह आधारित GPS, DNA फिंगर प्रिंटिंग जैसी तकनीक से युक्त होती जा रही है तो निश्चित ही तथ्यों की प्रमाणिकता नये सिरे से परिभाषित होने लगी है और यदि इन उपागमों के आधार पर यदि पुराने प्रमाण सही साबित न हों तो निश्चित ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण

KGS IAS

के तहत इतिहास का पुनर्लेखन होना चाहिए। उदाहरणत: विज्ञान की विश्व प्रसिद्ध पत्रिका "Nature" में यह प्रकाशित किया गया कि सिंधु सभ्यता अनुमानित 3000 BC की जगह उससे 5000 वर्ष पहले की हो सकती है।

स्पष्टत: यदि यह वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर प्रमाणित हो जाये तो नये सिरे से इतिहास लिखना ही चाहिए।

किन्तु यदि इतिहास का पुनर्लेखन साक्ष्यों या प्रमाणों पर आधारित न होकर किसी भावना या विचार धारा से ग्रसित अवैज्ञानिक बदलाव करना चाहे तो ऐसे इतिहास का पुनर्लेखन नहीं स्वीकार जा सकता।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

इतिहास का काल विभाजन -

इतिहास निरंतर प्रवाहित होने वाली धारा है। अत: वास्तविक अर्थों में इतिहास को कालखण्डों में बांटकर नहीं देखा जाना चाहिए किन्तु सामान्यत: इसे दो आधारों पर बांटा जाता है -

1. अध्ययन की सुविधा हेतु।
2. प्रवृत्तियों के आधार पर अर्थात कुछ विशेष गुण जो एक कालखण्ड में महत्वपूर्ण पहचान बन जाते हैं।

उदाहरण-स्वरूप

मध्य युग	आधुनिक युग
- सामंतवाद	- लोकतंत्र
- धर्मप्रधान चिंतन	- मानवकल्याण केन्द्रित चिंतन
- आस्था व विश्वास पर निर्णय	- तर्क व विवेक आधारित निर्णय

आधुनिक भारत का इतिहास -:

सामान्यत: इतिहासकारों के मध्य "आधुनिक भारत का इतिहास कब से माना जाये" को लेकर मतभेद बना हुआ है और मुख्यत: इसकी दो मान्यतायें रही हैं -

(a) 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद से

(b) 1757 में अंग्रेजों की प्लासी की विजय के बाद से

↓

जदुनाथ सरकार जैसे विद्वान ने तो यहां तक कहा कि 23 जून 1757 से भारत में मध्य युग की समाप्ति और आधुनिक युग का आरम्भ हुआ।

वास्तव में 18वीं सदी में निम्नलिखित राजनीतिक प्रवृत्तियों में बदलाव के कारण भारत के आधुनिक इतिहास के कालखण्ड का प्रारम्भ माना जाता है -

1- औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतनशील होना।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

2- उत्तराधिकारी व क्षेत्रीय राज्यों का मजबूत होकर उभरना अर्थात राजनैतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण होना।

3- विदेशी कंपनियों का व्यापार के लिए क्रमश: भारत आना और एकाधिकार के क्रम में अन्तत: ब्रिटिश साम्राज्य की सम्प्रभुता भारत में स्थापित कर लेना।

उपनिवेशवाद -:

यह एक आधुनिक संकल्पना मानी जाती है जो पूंजीवाद से प्रेरित है। किसी सुदूर देश पर नियंत्रण स्थापित कर उसके संसाधनों का उपयोग अपने मातृ देश के लिए करना ही उपनिवेशवाद को बढ़ावा देता है।

- यह एक जनांकिकीय संकल्पना भी माना जाता है। जिसके अनुसार कोई शक्तिशाली व प्रगतिशील देश किसी दूसरे क्षेत्र पर कब्जा कर अपने लोगों को वहाँ बसा देता है और उस क्षेत्र की सम्पूर्ण गतिविधियों को अपने स्वार्थ के अनुसार रूपांतरित करने लगता है। साम्राज्यवाद से उपनिवेशवाद इस अर्थ में विशिष्ट हो जाता है कि यहाँ सांस्कृतिक श्रेष्ठता का भाव अधिक होता है।

- सुलिवन के शब्दों में औपनिवेशिक प्रणाली उस स्पंज की तरह से कार्य करती है जो गंगा नदी के

KGS IAS

स्रोतों को सुखाकर टेम्स नदी में उड़ेल देती है।

उपनिवेशवाद का आधार

सैद्धान्तिक ⇓

- श्वेत व्यक्तियों के बोझ सिद्धान्त (WMB) के द्वारा नैतिक आधार देने का प्रयास किया गया जिसके अनुसार ईश्वर ने श्वेत व्यक्तियों को यह दायित्व देकर पृथ्वी पर भेजा है कि सर्वत्र प्रसारित होकर अश्वेतों अर्थात असभ्यों को सभ्यता का पाठ पढ़ा सकें। और यह तर्क भी देता है कि उपनिवेशों का आधुनिकीकरण इन्हीं के द्वारा किया गया।

वास्तविक ⇓

- आधुनिक तकनीक व ताकत के बल पर भारत जैसे सोने की चिड़िया कहलाने वाले देश का अंग्रेजों ने इस कदर शोषण किया कि वह गरीबी, भुखमरी और अकालों का देश बनकर रह गया।
स्पष्ट हो जाना चाहिए कि अंग्रेजों ने प्राथमिक उद्देश्य सदैव अपने स्वार्थों की पूर्ति को बनाया न कि भारतीय हितों को।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Mobile Based Learning Platform
KHAN SIR